दस कहानियाँ।

Vidwan

C. G. ABRAHAM, B. O. L,

for

FORM V

Published by the Govt. of Travancore-Cochin.

1952 — 53

Price As. 13

दस कहानियाँ

Vidwan

C. G. ABRAHAM, B. O. L.,

Chief Lecturer in Hindi, Mar Ivanios College

TRIVANDRUM

V. V. Press, Quilon

1952

विषयसूची

पाठ	पृष्ठ
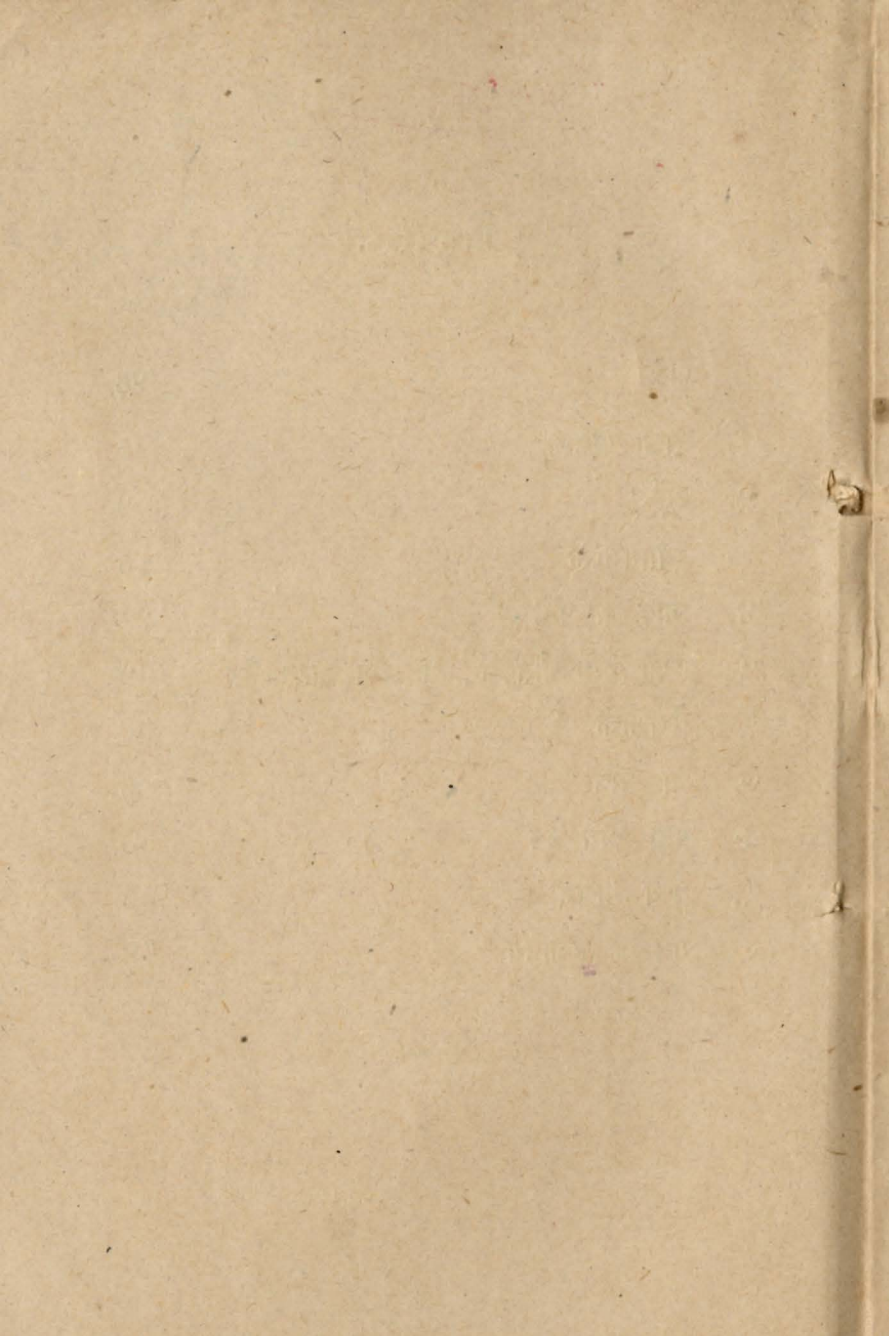
सच्चा फ़ैसला

अरब के किसी गाँव में एक सौदागर रहता था। उस के चार बेटे थे। कुछ दिन तक वे सब मिल-जुल कर रहे। लेकिन धीरे धीरे चारों में फूट पैदा हो गयी। सौदागर ने उन में मेल पैदा करने की बड़ी कोशिश की। लेकिन उस की कोशिश बेकार गयी। आख़िर उसने अपनी जायदाद चारों को बराबर बराबर बाँट दी। उस का एक कुत्ता भी था। सौदागर ने कहा कि उस पर चारों बेटों का हक़ बराबर होगा।

पिता के मरने के बाद बेटों में बड़ी दुश्मनी पैदा हो गयी।

एक दिन उस कुत्ते की एक टाँग टूट गयी। एक बेटे ने उस टाँग पर तेल की पट्टी बाँध दी। दूसरे दिन जब कुत्ता चूल्हे के पास लेटा हुआ था, तब अचानक उस पट्टी में आग लग गयी। कुत्ता वहां से भाग कर खलियान में पहुँचा। वहाँ रखे हुए अनाज पर भी

आग लगी । अनाज के ढेर जल कर राख हो गये । अब तीनों भाइयों ने चौथे से झगड़ा किया कि उसी के कारण यह नुकसान हुआ है ।

उस गाँव में एक काज़ी साहब रहते थे । वे बड़े इन्साफ़-पसन्द थे । वे किसी भी शिकायत का फ़ैसला 'दूध का दूध, पानी का पानी' करते थे ।

तीन भाइयों ने वहाँ जाकर चौथे की शिकायत की । काज़ी ने उन का बयान सुना । उन्होंने चौथे भाई को बुलवाया । उस से पूछा तो उस ने भी अपना बयान दिया । दोनों पक्ष का बयान सुनने के बाद काज़ी साहब ने यों फ़ैसला सुनाया—

'इस कुत्ते पर चारों का हक़ बराबर है । कुत्ते की एक टाँग टूट गयी और एक ने उस पर पट्टी बाँध दी थी । दूसरों को उस कुत्ते पर दया तक नहीं आयी । बेशक, उस पट्टी में आग लग गयी, इसी वजह से खलियान का अनाज जल गया । लेकिन, इस का ख्याल रखना चाहिये कि कुत्ता उस टाँग से चल कर खलियान में नहीं

गया । तीन टाँगों से ही चल कर वह खलियान में गया था । क्यों कि एक टाँग बिलकुल बेकार थी । उस हालत में उन तीनों टाँगों के कारण यह नुकसान हुआ था । टूटी हुई टाँग पर जिसने पट्टी बांधी, वह टाँग उसी के हक की है । बाकी तीनों टाँगें तीनों भाइयों के हक़ की हैं । इसलिये उन तीनों टाँगों के हकदारों को उस का नुकसान उठाना चाहिये ।'

काज़ी का फ़ैसला सुन कर तीनों बेटे अपना सा मुँह लेकर घर लौटे ।

सूई

दो भाई थे । बड़ा भाई बड़ा धूर्त और शराबी था । छोटा भाई बड़ा सीधा-सादा और मेहनती था । उन के पिता ने काफ़ी धन कमाया था । पिता की मृत्यु के बाद बड़े भाई ने पिता की सारी संपत्ति हड़प कर ली थी । छोटे भाई को वक्त पर खाना-कपड़ा तक नहीं मिलने लगा । एक दिन उसने बडे भाई

से शिकायत की । लेकिन बड़े भाई ने गुस्से में आकर उसे खूब पीटा और उसे घर से निकाल दिया ।

छोटा भाई घर छोड़कर चुपचाप चला गया । उस के दोस्तों ने उसे सलाह दी कि बड़े भाई पर मुक़द्दमा चलाया जाय । लेकिन छोटे ने कहा—'वे तो मेरे बड़े भाई हैं, मैं उन के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता । वे आराम से जीवन बितावें, मैं कहीं मेहनत-मज़दूरी करके अपना गुज़र कर लूँगा' ।

छोटे भाई ने पास के एक शहर में जा कर सिलाई का काम सीखा । वह किसी तरह अपनी जीविका उसी से कमाता था और बड़ी ग़रीबी में दिन काटता था ।

बड़ा भाई ऐश-आराम में दिन बिता रहा था । उसे अपने छोटे भाई की सुधि तक नहीं रही थी ।

एक दिन की बात है कि छोटा भाई बीमार पड़ा । उस के पास इलाज कराने केलिए फूटी कौड़ी भी नहीं थी । उस के दोस्तों ने उस की भर सक मदद की । लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ । उस

की बीमारी दिन-ब दिन बढ़ती गयी । एक दिन उस की हालत बड़ी नाजुक हो गयी । उस के बचने की उम्मीद नहीं थी । उस ने सोचा—'अब मैं कुछ क्षणों का मेहमान हूँ' । यहाँ से चल बसने के पहले बड़े भाई से कुछ बातें करने की उस की इच्छा हुई । लेकिन वहाँ तक जाने में वह असमर्थ था । उस ने बड़ी मुश्किल से भाई के नाम एक पत्र लिखा और उसे एक लिफ़ाफ़े में डाल कर उस में अपनी सूई भी रख दी । उसी दिन वह इस दुनिया से चल बसा ।

बड़े भाई को छोटे भाई का पत्र मिला । लिफ़ाफा खोला तो उस ने उस में एक सूई भी पायी । पत्र यों था:—

"बड़े भैया जी,

आप को जब तक यह पत्र मिलेगा तब तक मैं इस दुनिया से चल बसा हूँगा। जाने के पहले मैं आप से मिलना चाहता हूँ। मगर लाचार हूँ। आप से मिले बिना मैं चला जाता हूँ, उस केलिए माफ़ी चाहता हूँ।

आप से एक खास बात कहनी है । आप और मैं, हम दोनों एक ही माँ के पेट से पैदा हुए ।

एक ही माता की गोद में पले। मगर आप ने पिता की संपत्ति हड़प ली और मुझे घर से बाहर निकाल दिया। उस का मुझे खेद नहीं है।

मुझे सन्तोष है कि मैं घर से निकलने के बाद अभी तक मेहनत करके अपना पेट भरता रहा हूँ। आप ने बाप की कमाई पर अपने आराम के सामान जुटाये। मैं यहाँ गरीबी में दिन काट रहा था। कड़ी मेहनत के कारण मैं बीमार पड़ गया। अब स्वर्ग लोक जा रहा हूँ।

आप तो अपने भाई को भूल ही गये होंगे। क्यों कि आप धन ही को ज्यादा प्यार करते हैं। मुझे विश्वास है कि आप भी एक दिन वहाँ 'उस दुनिया में' आ जायेंगे। उस समय अपना तमाम धन भी अपने साथ लिये आने की आप कोशिश करेंगे। मैं भी अपनी सम्पत्ति अपने साथ ले जाना चाहता था। मेरी सम्पत्ति इस सूई के सिवा और कुछ नहीं। यही मेरे जीवन की सब से बड़ी सम्पत्ति थी। इसी से मैं ने अपनी जीविका कमाई थी। इसे, इतनी छोटी वस्तु को भी मैं अब अपने साथ ले जाने में अपने को असमर्थ पाता हूँ। लेकिन आप से

एक प्रार्थना है, जब आप अपनी प्यारी सम्पत्ति गाड़ियों में लाद कर वहाँ ले आयेंगे तो उस के साथ इस छोटी सूई को भी ले आकर मुझ दने की कृपा करें ।

बस इतना ही
अन्तिम प्रणाम
छोटा भाई"

पत्र पढ़ कर बड़े भाई की आँखों से अश्रुधारा बही । उसे अपनी करनी पर बड़ा पछतावा हुआ। मगर, अब पछताने से क्या हो सकता था ?

पश्चात्ताप की आग में उसका मन तपा । उस का धन–लोभ दूर हुआ । उस का स्वार्थ मिट गया। अपने प्यारे छोटे भाई की भोली-भाली मूर्ति उस की आँखों के सामने खड़ी हो गयी ।

उस ने एक लंबी साँस ली । अपनी बची हुई सम्पत्ति एक अनाथालय को लेख दी । फिर किसी ने उसे वहाँ नहीं देखा ।

स्वामिभक्ति

मेवाड के राना साँगा की मृत्यु हुई । उन के एक ही लड़का था । उस का नाम उदयसिंह था । साँगा की मृत्यु के समय वह पाँच बरस का था । मेवाड के सरदारों ने आपस में सलाह की । उन्होंने निश्चय किया कि उदय-सिंह के बड़े होने तक राणा वनवीर को राज्य का भार सौंप दिया जाय । वनवीर उदयसिंह का चाचा था । वह बड़ा दुष्ट था । उसे राज्य का बड़ा लोभ था ।

राज्य का अधिकार पाकर वनवीर बड़ा खुश हो गया । उस ने सोचा—'उदयसिंह अब मेरे रास्ते का काँटा है, उसे हटाने में ही मेरी भलाई है । लेकिन उसे कैसे हटाऊँ? उसे ज़िन्दा रखने से मेरी इच्छा पूरी न होगी' । आखिर उस ने उदयसिंह को मार डालने का निश्चय किया ।

महल में पन्ना नाम की एक दाई थी । उस का एक लड़का था । वह भी उदयसिंह की उम्र का ही था । पन्ना उदयसिंह को अपने बेटे से भी अधिक प्यार करती थी । दोनों बालक एक ही साथ खेलते

थे । पन्ना वनवीर के स्वभाव को जानती थी । वह वनवीर पर ज़रा भी विश्वास नहीं रखती थी। उदयसिंह की रक्षा केलिए हमेशा जागरूक रहती थी । एक दिन पन्ना को पता लगा कि वनवीर उदयसिंह को मारने केलिए आ रहा है ।

रात का समय था । पन्ना का बेटा भी उदयसिंह के पास सोया हुआ था । पन्ना घबरा गई । उदयसिंह को बचाने का कोई उपाय नहीं देखा । वह थोडी देर तक सोचती रही । अब देर करने का समय नहीं था । वह दौडी हुई उदयसिंह के पास गई । उसे उठाकर एक बड़े टोकरे में रखा और ऊपर से उसे ढँक दिया । उस के बाद एक इमानदार नौकर के हाथ में टोकरा देकर बोली—'देखो, इन में हमारा सर्वस्व है । इसे किले से बाहर ले जाओ । अमुक स्थान पर मेरा इन्तज़ार करना' । नौकर टोकरा लेकर चला गया ।

पन्ना ने अपने बेटे की ओर देखा और मन ही मन कहा'—"मुझे आज अपनी जान देकर भी उदयसिंह को बचाना चाहिये । लेकिन, अब मुझ से क्या हो सकता है? मैं तो एक स्त्री हूँ । वनवीर का मुकाबला करने की ताकत मुझ में नहीं है । हाँ, एक उपाय है । मगर,

मैं वह काम कैसे कर सकती हूँ? मैं अपने दिल को कैसे ऐसा बेरहम बना सकती हूँ? हे भगवान! क्या, तू मेरी परीक्षा लेना चाहता है? क्या, मुझे अपनी आँखों के तारे को उस कसाई के हाथ सौंप देना होगा? ओफ़! एक माता अपने प्राण के टुकड़े को उस नर-राक्षस के मुँह में कैसे धकेल दे सकती है? परन्तु, अपने स्वामी केलिये मुझे वह भी करना होगा । अपने राज्य की रक्षा केलिये इस से भी बढ़कर बलिदान मुझे करना होगा । राजा की रक्षा म प्राण देना प्रजा का फ़र्ज़ है । यदि उदयसिंह मारा जायगा तो देश अनाथ हो जायगा । इसलिये उस की रक्षा केलिये एक मामूली व्यक्ति का बलिदान कोई बड़ा कार्य नहीं है । मेरे प्यारे बेटे! तेरी माता आज तुझे अपने स्वामी की रक्षा केलिए बलि देना चाहती है । तेरा जीवन धन्य है । इतनी छोटी उम्र में ही तुझे अपने मालिक केलिए अपनी जान देने का सौभाग्य मिला । ईश्वर तुझे शान्ति दे ।

उस ने तुरन्त अपने बेटे को उठाकर, उस का मुँह चूम कर उदयसिंह की खाट पर लिटा दिया ।

वनवीर हाथ में तलवार लिये वहाँ आया । एक ही वार! बच्चे के मुंह से एक चीख निकली । पन्ना बेहोश होकर वहीं गिर पड़ी । वनवीर अपनी सफलता पर खुश होता हुआ वहाँ से चला गया ।

पन्ना को होश आये । वह अपने बेटे के पास गयी । देखा — अपने प्यारे पुत्र का सिर धड़ से अलग पड़ा है । उस के सिर में चक्कर आया । उस ने जी कड़ा कर बेटे को और एक बार अच्छी तरह देखा । मन ही मन कहा— 'लाल, तू धन्य है जिस ने अपने स्वामी की जान बचाने केलिये अपनी जान दे दी । मैं धन्य हूँ, जो ऐसे पुत्र की माता होने का अभिमान कर सकती हूँ' ।

पन्ना वहाँ से चली गयी । निश्चित स्थान पर वह नौकर पन्ना की राह देख रहा था । पन्ना वहाँ पहुँचकर रात की रात में उस राज्य से बाहर चली गयी । वह

उदयसिंह को लेकर कई राज्यों में भटकती रही। अन्त में कमलमीर के राजा ने उसे अभय दिया।

उदयसिंह के बड़े होने तक पन्ना उस की देख-भाल करती रही। उस के बड़े होने पर पन्ना ने उदयसिंह के जीवित रहने की ख़बर मेवाड़वालों को दी। वहाँ के सरदार लोग बड़े खुश हुए। वनवीर राज्य छोड़कर भाग गया। उदयसिंह सिंहासन पर बैठा। पन्ना की आशा पूरी हुई।

सब लोग पन्ना के इस त्याग की बात आज भी याद करते हैं।

जादू की पेटी

एक राज्य में एक राजा था । एक दिन वह अपने वज़ीर के साथ घूमने निकला । रास्ते में राजा ने मन्त्री से पूछा कि सब से बढकर काम की चीज़ क्या है? मन्त्री ने जवाब दिया कि धन ही सब से अधिक काम की चीज़ है । राजा और मन्त्री के पीछे पीछे एक भिखारी भी जा रहा रहा था । वह मन्त्री का जवाब सुनते ही बोल उठा कि 'अगर पास हो तो' । राजा ने फिर मन्त्री से पूछा कि मनुष्य की रक्षा करनेवाली वस्तु क्या है? मन्त्री ने कहा कि खाना ही मनुष्य की रक्षा करनेवाला है । भिखारी ने तुरन्त कहा — उस के साथ यह भी जोड़ दो कि 'अगर हज़म हो जाय तो' ।

राजा ने फिर मन्त्री से कई प्रश्न किये । मन्त्री ने अपनी समझ के अनुसार उन प्रश्नों का जवाब दिया । लेकिन राजा को उस भिखारी की बात अच्छी लगी । उस ने उसे गौर से देखा । उस भिखारी का शरीर बड़ा कमज़ोर था । भूखे रहने से उस की यह दुर्दशा हुई थी । उस के कपड़े फटे-पुराने थे । राजा ने उस से पूछा तो मालूम हुआ कि वह पढ़ा लिखा है और जीविका केलिए कोई उपाय न देखकर भीख माँग रहा है ।

राजा को उस पर दया आयी और उसे अपने साथ महल में ले गया । वहाँ पहुँच कर राजा ने उसे एक छोटी नौकरी दे दी ।

वह ग़रीब बड़ा बुद्धिमान और ईमानदार था । वह सब का प्रेमपात्र बन गया । राजा भी उस के काम से बड़ा खुश हुआ । उस की तरक्की हुई । उसे कई पदों पर राजा ने नियुक्त किया । वह अपनी ईमानदारी और बुद्धिमानी से सब से योग्य निकला । राजा उस पर इतना प्रसन्न हुआ कि आखिर उसे अपना मंत्री बना दिया ।

एक भिखारी को इस प्रकार राज्य के मंत्री के स्थान पर नियुक्त करना दूसरे नौकरों को बहुत खटका । वे उस मंत्री के कट्टर दुश्मन हो गये । वे उसे सताने और उस स्थान से हटाने की तरकीब सोचने लगे ।

एक दिन उन में से कुछ लोगों ने राजा से कहा — 'महाराज, आप अपने नये मंत्री पर बहुत विश्वास रखते हैं । वह ठीक नहीं है । वे बड़े बेईमान हैं । वे अपने जादू से आप के मन्त्री बने

हैं। अपने जादू के प्रभाव से ही उन्होंने आप को वश में रखा है।'

राजा—'तुम लोगों की बात मेरी समझ म नहीं आती । वे तो बड़े बुद्धिमान और ईमानदार हैं। मैं ने खुश होकर उन्हें यह ओहदा दिया है।

लोग—जी हुजूर, उन के जादू का प्रभाव है कि आप उन पर खुश हो गये हैं । वे परले सिरे के धोखेबाज़ हैं।

राजा—इस का क्या प्रमाण है?

लोग—उन के घर में एक यन्त्र है । वह एक चाँदी की पेटी में बन्द है। रोज़ वे काम पर जाने के पहले वह पेटी खोलकर उस यंत्र की पूजा करते हैं। उस यंत्र के जादू से ही वे भिखारी से मंत्री बने हैं।

राजा को पहले उन लोगों की बातों पर विश्वास नहीं आया । सोचा कि ये लोग उन से डाह करते हैं । इसलिए उन की शिकायत कर रहे हैं । लेकिन रोज़ रोज़ एक न एक कर्मचारी नये मंत्री की शिकायत करता और उन के जादू के बारे में

कहता । आखिर राजा को इस का रहस्य जानने की इच्छा हुई । राजा चिन्तित रहने लगा।

एक दिन राजा खुद मंत्री के घर में पहुँचा । राजा को अचानक अपने घर में देखकर मंत्री घबड़ा गया । उस ने राजा से वहाँ पधारने का कारण पूछा । राजा ने कहा कि अभी तुम्हें मेरे साथ चलना होगा । मुझे कुछ ज़रूरी काम है । तुम से सलाह लेनी है । 'मैं अभी आया' कहकर मंत्री घर के अन्दर जाने लगा ।

राजा — अन्दर क्यों जा रहे हो? पोशाक बदलने की ज़रूरत नहीं । यही पोशाक काफ़ी है । मेरे साथ अभी निकलो । ज़रूरी काम है ।

मंत्री — महाराज, मुझे अन्दर जाना ही चाहिये । पल भर में वापस आऊँगा ।

राजा को सन्देह हो गया । सोचा — 'उन लोगों का कहना ठीक ही है । अन्दर जाकर यह उस यंत्र की पूजा करने जा रहा है' । यह सोचकर राजा ने कहा — 'अन्दर जाने की इतनी ज़रूरत क्यों है? मैं भी तुम्हारे साथ अन्दर आऊँगा' ।

मंत्री—महाराज, आप अन्दर न आवें। आप को अन्दर आने की क्या ज़रूरत है? आप यहीं बैठे रहें। मुझे जाना ही पड़ता है। मेरा सब कुछ अन्दर है।

राजा का सन्देह और भी बढा। उसका विश्वास पक्का होने लगा कि मन्त्री यन्त्र की पूजा करने जा रहा है। आखिर राजा ने मन्त्री से कहा कि 'मैं भी ज़रूर तुम्हारे साथ अन्दर आना चाहता हूँ'।

मन्त्री—यदि आप हठ करते हैं तो अन्दर आ सकते हैं। मुझे कोई उज्र नहीं। आइये।

यह कहते हुए मन्त्री अन्दर चला गया। राजा भी पीछे पीछे चला। अन्दर जाने पर राजा ने देखा कि वहाँ एक छोटी पेटी रखी हुई है। मन्त्री वही पेटी खोलकर बड़ी भक्ति के साथ उस के सामने हाथ जोडे खड़ा हो गया। राजा ने उस पेटी में गौर से देखा। उस में कुछ फटे पुराने कपड़े नज़र आये।

राजा ने पूछा— उस चीथडे में क्या है? मुझे भी बताओ, उस में क्या जादू है।

मन्त्री—आप से यह बात कहने में मुझे शरम मालूम होती है । उस में कोई जादू नहीं है। मेरे पुराने कपड़ों के सिवा और कुछ नहीं है । आप को याद है, आपने मुझे पहले पहल भिखारी के वेष में देखा था । उस समय के अपने पुराने कपडे मैं ने इस में सुरक्षित रखे हैं। काम पर जाने के पहले मैं रोज़ उन कपडों को देखता हूँ और अपनी पहली दशा का स्मरण करता हूँ । ये चीथडे मेरा सब कुछ हैं मेरा ईश्वर भी यही है । इस चीथडे को देखकर मैं यह समझ लेता हूँ कि एक भिखारी और मुझ में कोई फ़रक़ नहीं है। यही विचार मुझे ठीक रास्ते पर चलाता और मुझ से ग़रीबों की सेवा कराता है ।

राजा की शङ्का दूर हो गयी । वह अपने नये मन्त्री का पहले से भी अधिक आदर करने लगा । उस ने मन्त्री की झूठी शिकायत करनेवाले कर्मचारियों को कड़ी सज़ा दी । अपने नये मन्त्री की सलाह से राजा ठीक तरह से अपने राज्य का शासन करने लगा । प्रजा अमन-चैन से रहने लगी ।

"जो जैसा बोता है,
सो वैसा काटता है"

तीन हज़ार वर्ष पहले नागपुरी में एक राजा था। वह बड़ा निर्दय और क्रोधी था।

एक दिन राजा अपने महल में सिंहासन पर बैठा हुआ था। वहाँ दरबार लगा हुआ था। कई राजकुमार और दरबारी वहाँ बैठे हुए थे। राजा ने दरबारियों से पूछा—'आप लोग आज इतने खुश क्यों हैं?'

दरबारियों ने कहा—'महाराज, आप की मेहरबानी से हम खुश हैं'।

राजा की बेटी मन्दारमाला उस समय वहाँ आ गई। वह दरबारियों का जवाब सुनकर हँस पड़ी।

राजा ने गुस्सा होकर राजकुमारी से पूछा—'तू क्यों हँस रही है?'

उस ने जवाब दिया—पिताजी, ये लोग झूठ बोल रहे हैं।

राजा—सो कैसे?

राजकुमारी—इन्होंने कहा कि आप की कृपा से हम लोग खुश हैं। यह झूठ है। इसलिये मैं हँसी।

राजा—तब सच्ची बात क्या है?

राजकुमारी—हर एक आदमी अपने काम में सुखी या दुःखी होता है। खुश दिल हमेशा खुश रहता है।

यह जवाब सुनकर राजा आपे से बाहर हो गया और अपने नौकरों को बुलाकर कहा— 'मैं इसे एक सबक सिखाना चाहता हूँ। कहीं से एक भिखारी को पकड़ लाओ और उसके साथ इसकी शादी कर दो। मैं देखना चाहता हूँ कि उसे वहाँ कैसा सुख मिलेगा'।

इतने में रानी वहाँ आ पहुँची। उसे सब बातें मालूम हो गयीं। उसने अपनी बेटी से कहा— 'तुम अपने पिताजी से माफ़ी मांगो'।

राजकुमारी ने दृढ स्वर में जवाब दिया—मैं मरते दम तक झूठ नहीं बोलूँगी। मैं दरबारियों की तरह पिताजी की झूठी तारीफ़ नहीं कर सकती'।

राजा के नौकर शहर में भिखारी की तलाश करने लगे। थोड़ी देर खोजने पर उन्हें एक भिखारी मिला।

नौकरों ने उसे पकड़ लिया और ज़बरदस्ती राजा के महल में ले गये ।

राजा ने भिखारी से कहा— 'मैं अपनी लड़की की शादी तुम से कर देना चाहता हूँ' ।

भिखारी बोला — 'हुज़ूर, मेरे जैसे एक भिखारी के साथ आप की बेटी की शादी कर देना उचित नहीं है' ।

राजा ने गुस्से से कहा — 'क्यों उचित नहीं है' । भिखारी ने फिर कुछ भी न कहा — ।

भिखारी के साथ राजकुमारी की शादी हुई । तमाम लोग उस बेचारी राजकुमारी की फूटी क़िस्मत पर दुःखी हुए । राजकुमारी को दुःख नहीं हुआ । उसे अपने भाग्य पर पूरा भरोसा था ।

राजकुमारी अपने माँ-बाप को प्रणाम कर, अपने पति के साथ ख़ुशी ख़ुशी चली गयी । जब वे दोनों जा रहे थे, तब भिखारी थकावट के मारे ज़मीन पर बैठ गया । उसने उठने का प्रयत्न किया । लेकिन उठ नहीं सका ।

उसने राजकुमारी से कहा — 'राजकुमारी, मैं यहाँ से एक क़दम भी आगे नहीं चल सकता' ।

राजकुमारी—'प्रभो, आप चिन्ता न करें। आप जहाँ चाहें, मैं आपको उठाकर ले चलूँगी'।

राजकुमारी उसे वहाँ से उठाकर ले गयी। राजकुमारी के कष्टों को देखकर कुछ लोग महल में जाकर राजा से बोले—'महाराज, आप की पुत्री और दामाद दोनों बड़ी तकलीफ़ में हैं। आप कम से कम उन केलिए एक झोंपड़ी कहीं बनवा दें'।

राजा ने उनकी प्रार्थना के अनुसार दोनों केलिए एक कुटी बनवा दी। राजकुमारी और उसका पति दोनों वहाँ आराम से रहने लगे।

एक दिन भिखारी ने राजकुमारी से कहा—'मेरी प्यारी, मेरे लिये तुम क्यों इतनी तकलीफ़ उठा रही हो? तुम अपने माँ-बाप के यहाँ चली जाओ और आराम से रहो।

राजकुमारी ने कहा—'नाथ, मेरा सुख और दुःख सब कुछ आप के साथ है। चाहे मेरा शरीर

निर्बल हो जाय, मेरी जवानी बरबाद हो जाय, और चाहे मेरी जान तक चली जाय, मैं आपको छोड़ूँगी नहीं'।

भिखारी को मालूम हो गया कि राजकुमारी उसे दिल-जान से प्यार करती है।

दूसरे दिन सबेरे राजकुमारी ने अपनी झोंपड़ी के सामने एक सुन्दर रथ देखा। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने अपने पति से पूछा कि यह रथ यहाँ कैसे आया है?

भिखारी ने कहा—'यह मैं ने तुम्हारे लिए मंगाया है। तुम जल्दी तैयारी करो। अभी हमें यहाँ से निकलना है। मैं तुम्हें लेकर अपने घर जाना चाहता हूँ'।

थोड़ी देर में दोनों रथ में चढ़कर निकले। शाम तक रथ भिखारी के देश में पहुँचा। भिखारी ने

रथ से उतरकर अपनी पोशाक बदली। तब वह एक सुन्दर राजकुमार जैसा दीख पड़ा। राजकुमारी यह देखकर दंग रह गयी।

रथ आगे बढ़ा। आख़िर रथ एक महल के फाटक पर पहुँच गया। वहाँ बड़ी धूमधाम से उन दोनों का स्वागत हुआ।

बच्चो, अब तुम समझ गये होगे कि वह भिखारी एक मामूली भिखारी नहीं था। वह उस राज्य का राजा था। बड़ा प्रतापी और पराक्रमी था। वह अपना वेष बदलकर देश देश म घूम रहा था। आख़िर एक भिखारी के वेष में नागपुरी में पहुँच गया। उसी समय सिपाही उसे पकड़कर राजा के पास ले गये। उसके बाद जो जो बातें हुई सो तुम जानते ही हो।

मन्दारमाला के माँ-बाप को इन सब बातों की खबर मिली। उन्होंने अपनी बेटी के भाग्य की सराहना की। उसे देखने को उनका जी तरसने लगा। दोनों राजकुमारी को देखने के लिए रवाना हुए।

महल में पहुँचते ही राजकुमारी ने अपने माँ-बाप का स्वागत किया और उन्हें प्रणाम कर वह बोली— 'पिताजी, मैं ने आप से सच कहा। इसलिए आपने मुझे घर से निकाल दिया है। अब आप ने देख लिया है कि खुश दिल हमेशा और सब जगह खुश रहता है'।

राजा ने अपनी गलती मान ली। उसने कहा– 'सचमुच दरबारियों से मैं ने धोखा खाया। वे मेरी झूठी तारीफ़ करते थे। मैं उन लोगों की बातों पर विश्वास करता था। अब मैं ने समझ लिया कि

मनुष्य अपने काम से सुखी या दुःखी हो जाता है।"

"जो जैसा बोता है, सो वैसा काटता है"

देशभक्ति

पहिले जावा मे जयपाल नाम का एक लड़का था। वह बड़ा देश-भक्त था। उस का पिता सरकारी सेना में एक अफ़सर था।

उस समय जावा श्रीविजय साम्राज्य के अधीन था। जावावाले अपनी आज़ादी पाने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन सरकार उन के प्रयत्नों को विफल कर देती थी।

एक दिन जयपाल एक पुस्तक पढ़ रहा था। तब उस का पिता वहाँ आ पहुँचा। पुत्र के हाथ 'देश की आज़ादी' नाम की पुस्तक देख कर पिता आपे से बाहर हो गया। वह पुस्तक पढ़ना सरकार ने मना किया

था । पिता ने पुत्र के हाथ से किताब छीन ली और उसे फ़ाड़ कर फेंक दिया । उस का क्रोध इस से भी शांत नहीं हुआ । उस ने अपने बेटे को दो चार तमाचे भी लगा दिये ।

जयपाल ने अपना काम नहीं छोड़ा । वह देश की सेवा करता रहता था । उस का पिता अपने बेटे के काम से हमेशा असन्तुष्ट रहता था ।

एक दिन देश के नेताओं ने एक बड़ी सभा बुलाने का निश्चय किया । सरकार को इस की ख़बर मिली । सरकार ने उस सभा को रोकने का प्रबन्ध किया ।

देश भक्तों ने सम्मेलन की तैयारी की । देश के बड़े बड़े नेता उस सभा में शामिल होने केलिए आये ।

शाम का समय था । सम्मेलन शुरू हुआ । स्वतन्त्रता का झंडा फहराया गया । लाखों लोग वहाँ आ जुटे थे । जयपाल भी उस सभा में शामिल हुआ था ।

सरकार के सिपाही पहले ही उस सभा को रोकने केलिए तैयार खड़े थे । एक अफ़सर ने आगे बढ़कर सभा बन्द करने और लोगों को अपने अपने घर लौट जाने का हुक्म दिया । लेकिन वे देश-भक्त लोग कब माननेवाले थे? उन्होंने सरकार के हुक्म की परवाह नहीं की । सभा का कार्यक्रम शुरू हुआ ।

बस, फिर क्या था? सिपाही देश-भक्तों पर टूट पड़े । वे गोलियों की वर्षा करने लगे । थोड़ी देर में वहाँ की ज़मीन लाशों से पट गयी । जो लोग बचे हुए थे, उन में भी जोश आ गया । वे भी हाथ में झंडा लिए-'स्वतन्त्रता की जय'— के नारे बुलन्द करने लगे । जयपाल भी बचा हुआ था । उस के हाथ में एक झंडा था । सिपाहियों ने उसे भी पकड़ लिया । एक सिपाही ने उस से कहा कि झंडा फेंक दो ।

जयपाल ने कहा– 'मरते दम तक नहीं छोड़ूँगा, यह झंडा मेरी नाक है' ।

सिपाही ने तलवार उठायी और एक ही वार में उसकी नाक काट ली और फिर पूछा—'अब बोलो, क्या, झंडा फेंक दोगे या नहीं? जयपाल का शरीर खून से तर-ब तर हो गया। उस ने दृढ़ता के साथ कहा-'हरगिज़ नहीं, यह झंडा मेरे हाथ पैर हैं'।

सिपाही ने फ़ौरन उस के हाथ-पैर भी काट डाले। बालक ज़मीन पर गिर गया। झंडा उस के दाँतों में दबाये हुए था।

सिपाही ने पूछा-' अब बताओ, झंडा छोड़ते हो कि नहीं'?

जयपाल ने गम्भीरता से कहा—कभी नहीं, यह मेरा प्राण है'।

तलवार के अन्तिम वार ने उस साहसी देश भक्त का सिर धड़ से अलग कर दिया।

जयपाल का पिता उस सेना का नायक था। वह कुछ दूरी पर खड़े हुए अपने वीर पुत्र का बलिदान देख रहा था। जब अपने वीर पुत्र का सिर ज़मीन पर गिरा तब उस से नहीं रहा गया। उस के दिल में

बिजली दौड़ी। उसने देश भक्ति की महिमा पहचानी।

वह दौड़ा हुआ अपने पुत्र के पास आया— अपने पुत्र का सिर गोद में उठाकर शोक करने केलिए नहीं, बल्कि उस झंडे की रक्षा करने केलिए।

उसने झंडा हाथ में लेकर कहा—'अब मैं ही इस झंडे का रक्षक हूँ। देखूं मुझे कौन रोकता है'?

सिपाही हक्काबक्का रह गया। कुछ क्षण में उस के होश ठीक हुए। उस ने अपने अफसर से कहा- 'छोड़ दीजिये उसे, नहीं तो मुझे आप के साथ भी ....'

अफसर ने कड़ककर कहा—'कुत्ते! तू मेरा क्या कर सकता है? काट ले, मेरा भी सिर, वह भी इस झंडे पर न्योछावर है'।

सिपाही की तलवार फिर उठी। बस, उस अफसर का सिर भी ज़मीन पर गिरा।

बाप बेटे दोनों के सिर खून से लथ-पथ होकर पास पास पड़े हुए थे।

इस बलिदान ने जनता की देश भक्ति की आग

भड़का दी। सारे लोग देश की आज़ादी केलिए आत्म-त्याग करने को तैयार हुए। सिपाही भी देश-भक्तों के दल में मिल गये। विदेशी सरकार से उन्होंने अपनी आज़ादी छीन ली। देश में सब जगह 'स्वतन्त्रता की जय'-के नारे गूँज उठे।

चोर मंत्री।

चन्द्रपुरी में सोमेश्वर नाम का एक राजा था। वह बड़ा न्यायी और सत्यप्रिय था। वह अपनी प्रजा के सुख का बड़ा ख्याल रखता था। उस के राज्य में चोर और डाकू कम थे। वह दुःखियों के दुःख और ग़रीबों की ग़रीबी दूर करने की कोशिश करता रहता था। उस की प्रजा बड़ी सुखी थी।

राजा वेष बदलकर अपनी प्रजा की हालत जानने केलिए सब जगह घूमा करता था। एक दिन की

बात है कि वह एक सन्यासी का वेष धरकर हाथ में एक कमंडल लिये घूम रहा था। रात का समय था। सड़कों पर लोगों का आना-जाना बन्द हो गया था। घूमते घामते वह एक गली के मोड़ पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही अचानक एक चोर उस के सामने आ खड़ा हुआ। सन्यासी बिलकुल नहीं घबराया। चोर ने सन्यासी से कहा—'तुम्हारे पास जो कुछ रुपया है, सब मुझे दे दो'।

सन्यासी—तुम कौन हो?

चोर—देखते नहीं हो, मैं भी तुम्हारे समान एक आदमी हूँ। मुझे रुपये चाहिए, रुपये। समझे?

सन्यासी—मैं रुपया दूँगा। लेकिन यह तो बताओ कि तुम्हारा घर कहाँ है और तुम्हारा धन्धा क्या है?

चोर—मेरा घर यहाँ पास है। पहले मैं एक ग़रीब किसान था। खेत सब बिक गया। घर में स्त्री और आठ बच्चे हैं। बड़ी ग़रीबी में हम दिन काटते हैं।

चोरी करके अपनी जीविका कमाता हूँ । कोई दूसरा उपाय नहीं है ।

चोर की बातें सुनकर सन्यासी ने कहा—'भाई, देखो, मैं अपने पास जो कुछ है, सब तुम्हें दे दूँगा । मगर, तुम से एक बात की प्रतिज्ञा चाहता हूँ' ।

चोर—कैसी प्रतिज्ञा ?

संन्यासी—तुम्हें वचन देना होगा कि मैं आगे कभी झूठ नहीं बोलूँगा । क्या इस केलिए राज़ी हो ।

चोर—रुपया दोगे तो मैं ऐसा वचन दूँगा ।

संन्यासी ने तुरन्त अपनी कमर में बन्धी हुई थैली लेकर उसे दी और कहा—'देखो, इस में अब तुम्हारी ज़रूरत भर केलिए रुपये हैं । इस से अपना काम चलाना । लेकिन आगे झूठ नहीं बोलना । हमेशा सच बोलोगे तो रुपये मिल जायंगे' ।

चोर—सो कैसे ?

संन्यासी—भगवान दे देंगे ।

चोर के मन पर संन्यासी की बातों का बड़ा असर पड़ा। उस ने संन्यासी से विनीत भाव के साथ कहा—'महाराज, क्षमा कीजिये। आज से आप मेरे गुरु हुए। आप ने मुझे उपदेश दिया। रुपया भी दिया। मैं ने ऐसा दयालु आदमी नहीं देखा है। आप बड़े महात्मा मालूम होते हैं। आगे से मैं झूठ नहीं बोलूँगा। लेकिन चोरी करना छोड़ नहीं सकता'।

संन्यासी उसे आशीर्वाद देकर चला गया। वह मन ही मन प्रसन्न हुआ। उसे मालूम था कि सचाई और चोरी दोनों एकसाथ नहीं चल सकतीं।

दूसरे दिन रात को राजा एक मामूली आदमी के वेष में निकला। पिछले रोज़ की तरह वह एक गली से होकर जाने लगा। उस समय उस ने देखा कि एक आदमी दबे पाँव जा रहा है। राजा ने उस के पास पहुँचकर पूछा— अरे तुम कौन हो? कहाँ जा रहे हो?

आदमी ने जवाब दिया— 'मैं एक चोर हूँ। राजमहल में चोरी करने केलिए जा रहा हूँ'।

राजा को मालूम हो गया कि वह पिछले दिन का चोर ही है। उस ने मन ही मन सोचा—इस की सच्चाई की और एक बार परीक्षा लेनी चाहिये। पूछा—'तुम चोर होकर सच कैसे कहते हो? सच कहने से चोरी कैसे कर सकते हो? पकड़े नहीं जाओगे'?

चोर—सच कहने से चोरी में कोई बाधा नहीं पड़ेगी। भगवान मदद देंगे।

राजा—तुम राजा के महल में कैसे घुसोगे? वहाँ तो पहरेदार हैं।

चोर—वहाँ जाकर देख लेना है। वहाँ जाने पर कोई न कोई तरकीब सूझेगी।

राजा—अच्छा, मैं तरकीब जानता हूँ। मैं तुम्हें

सब कुछ बता दूँगा । क्या मुझे भी चोरी का आधा भाग दे दोगे?

चोर—तुम कौन हो? क्या मेरी तरह...

राजा—हाँ, मैं भी तुम्हारी तरह एक चोर हूँ । लेकिन मुझे महल में घुसने की हिम्मत नहीं है ।

चोर—बड़ी खुशी की बात है । मुझे एक अच्छा साथी मिल गया । तुम तरकीब बता दो, फिर देखो कि मैं चोरी कैसे करूँगा!

दोनों महल के पास पहुँचे । राजा ने चोर को अन्दर जाने का एक गुप्त मार्ग दिखाते हुए कहा—इधर से होकर जाओ, अन्दर पहुँच जाओगे ।

चोर उस रास्ते से चला । महल के एक बड़े कमरे में पहुँच गया । वहाँ एक छोटा सन्दूक था । उस ने उसे खोलकर देखा तो उस में पाँच हीरे की अंगूठियाँ थीं । वह बड़ा खुश हुआ । लेकिन फिर सोचा—'यदि मैं पाँचों चुरा लूँ तो आधा आधा बाँटना

मुश्किल हो जायगा' यह सोचकर चार अंगूठियाँ लेकर वह बाहर आया ।

राजा ने पूछा—क्या कुछ मिल गया?

चोर—चार हीरे की अंगूठियाँ मिलीं ।

राजा—सिर्फ़ इतना ही?

चोर वहाँ एक पेटी में पाँच हीरे की अंगूठियाँ थीं । मैं ने सोचा-पाँचों लेने से बराबर बराबर बांटने में कठिनाई होगी । इसीलिए मैं ने चार ही ली हैं ।

राजा को चोर की बात पर पूरा विश्वास हो गया और पहले की शर्त के अनुसार दो अंगूठियाँ लेकर चोर वहाँ से चला गया । जाने से पहले चोर के घर का पता वगैरह भी राजा ने पूछ लिया था ।

दूसरे दिन राजा ने अपने मन्त्री को बुलाकर कहा—कल रात को यहाँ किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी है? और उस बड़े कमरे में जाकर देख लो, उस छोटी पेटी में पाँच हीरे की अंगूठियाँ हैं या नहीं' ।

मन्त्री उस बड़े कमरे में पहुँचा । पेटी खोलकर देखा तो उस में सिर्फ एक अंगूठी दिखाई पड़ी । मन्त्री ने सोचा कि एक अच्छा मौका हाथ लगा है । अब इस हीरे की अंगूठी को मैं उड़ा लूंगा । राजा से कहूँगा—चोर सब उड़ा ले गया है । यह सोचकर उस ने वह अंगूठी चुरा ली और राजा से बोला—'महाराज कमरे में पेटी है । पाँचों अंगूठियाँ गायब हैं' ।

राजा को मन्त्री की बात पर विश्वास नहीं हुआ । सोचा—इस ने ज़रूर एक अंगूठी चुरा ली है । राजा ने तुरन्त सिपाही को हुक्म दिया कि मन्त्री को गिरफ्तार करो और उस की तलाशी लो ।

सिपाही ने मन्त्री को कैद कर लिया । तलाशी लेने पर वह अंगूठी मिल गयी । मन्त्री को कड़ी सज़ा देकर जेल भेज दिया । फिर उस चोर को बुलवाया और उस से कहा—तुम्हें आज से मैं अपना मन्त्री बनाता हूँ ।

यह सुनकर चोर घबड़ा गया । उस ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज, आप यह क्या कह रहे हैं ।

राजा—तुम बडे सच्चे हो । सच बोलने से भगवान हमें सब कुछ दे देता है ।

राजा ने उस से पूरा हाल कहा । चोर को यह सुनकर बड़ी खुशी हुई । उस दिन से वह चोर नहीं रहा । राजा का मन्त्री बन गया ।

बड़ा कौन है ?

पुराने ज़माने में उत्तरभारत में एक संन्यासी था । वह बडा विद्वान और तपस्वी था । लोग उस की विद्वत्ता की तारीफ़ करते और उस की दिव्यशक्ति से प्रभावित हो जाते थे । उस के कई शिष्य थे ।

एक बार उस राज्य के राजा ने उस सन्यासी को अपने दरबार में बुलवाया । राजा भी बड़ा विद्वान था । वह सन्यासी की विद्वत्ता की परीक्षा लेना चाहता था । उस ने सन्यासी का बड़ा स्वागत किया ।

सन्यासी ने राजा से पूछा—'महाराज' आपने मुझे यहाँ क्यों बुलवाया है'?

राजा—मैं ने आप की विद्वत्ता की बात सुनी है। आप बड़े महात्मा और दिव्य-शक्तिवाले हैं। मैं आप से एक प्रश्न करना चाहता हूँ। मैं ने कई सन्यासियों से यही सवाल किया है। लेकिन मुझे किसी से सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला है। सवाल यह है—'संन्यास-आश्रम बड़ा है या गृहस्थाश्रम'?

सन्यासी—बस यही सवाल है? मैं इस का ठीक जवाब दे सकता हूँ।

राजा—यदि आप यह सिद्ध करें कि संन्यास बड़ा है तो मैं गृहस्थाश्रम छोडकर संन्यास ग्रहण करूँगा। यदि यह साबित हो जाय कि गृहस्थाश्रम बडा है तो आप को संन्यास छोडकर गृहस्थाश्रम स्वीकार करना होगा।

सन्यासी—मुझे आप की शर्त स्वीकार है। लेकिन मेरी भी कुछ शर्तें हैं। क्या आप उन्हें स्वीकार करने को तैयार हैं?

राजा — मैं तैयार हूँ। शर्तें सुनाइये।

सन्यासी — पहली शर्त यह है कि छः महीने के बाद ही मैं इस सवाल का जवाब दूंगा। तब तक मैं जो कुछ करूँ, उस के बारे में आप को मुझ से कुछ नहीं पूछना चाहिये। दूसरी शर्त यह है कि मैं आप से जो कुछ करने को कहूँ, तुरन्त आप को उसे करना होगा।

राजा ने सन्यासी की शर्तों को मंजूर कर लिया। संन्यासी वहाँ रहने लगा। राजा प्रति दिन सन्यासी के दर्शन करने जाता था। पाँच महीने बीत गये। राजा अधीर हो गया। सोचा—अब एक महीना और है, इसी बीच में यह सन्यासी मेरे सवाल का जवाब कैसे देगा? अभी तक तो कुछ नहीं हुआ है।

एक दिन रोज़ की तरह राजा सवेरे सन्यासी के दर्शन करने गया। संन्यासी ने राजा से कहा—'कल सुबह हमें भ्रमण के लिए जाना है। तैयार रहिये। लेकिन आप अपना वेष बदल लें कि कोई आप को पहचान न लें। भ्रमण में दो तीन सप्ताह लगेंगे। उस के लिए भी आवश्यक प्रबन्ध कर लीजिये।'

राजा ने यात्रा का सब इन्तज़ाम किया। दूसरे दिन सबेरे सन्यासी ने भी अपना वेष बदल लिया और दोनों निकले। चलते चलते वे एक राज्य में पहुँचे। वहाँ की राजधानी में उस दिन एक राजकुमारी का स्वयंवर था। कई राजकुमार आये हुए थे। सन्यासी और राजा भी राजोचित वेष धारण कर स्वयंवर देखने गये।

संन्यासी और राजा स्वयंवर के मण्डप के पास जा बैठे। वहाँ कई राजकुमार बैठे हुए थे। ठीक समय पर राजकुमारी वहाँ पहुँच गयी।

राजकुमारी हाथ में वरमाला लिए एक एक राजकुमार को देखते जाती थी। लेकिन कोई राकुमार उसे पसन्द नहीं आया। मण्डप के पास बैठे हुए एक युवक पर उसकी दृष्टि पड़ी। उस ने दूसरे ही क्षण वरमाला उस के गले में पहनायी। वह हमारा सन्यसी ही था। संन्यासी ने तुरन्त उस माला को

गले से उतार फेंका । बड़ी जल्दी वहाँ से भाग निकला । सब लोग यह देखकर चकित हो गये । राजा भी उस के पीछे भागा । दोनों एक जंगल में पहुँचे । रात हो गयी थी । दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ गये । राजा को बड़ी भूख लग रही थी । जाड़े के कारण राजा का शरीर ठिठुर रहा था । राजा को संन्यासी पर गुस्सा आ रहा था । लेकिन शर्तों की वजह से वह चुपचाप बैठा रहा ।

थोड़ी देर के बाद सन्यासी ने राजा से पूछा — महाराज, आप को भूख लग रही होगी न ?

राजा ने कहा — जी हाँ, बड़ी भूख लग रही है । बड़ी ठण्ठ भी लगती है ।

उस पेड़ के घोंसले में दो कबूतर आराम से रहते थे । उन्होंने राजा और संन्यासी की बातचीत सुनी । कबूतर ने अपनी कबूतरी से कहा — देखो इन लोगों में एक कैसा दुःखी है । यदि मैं उस की कुछ सेवा

कर सकूँ तो अपने जीवन को सफल समझूँगा । कबूतर उड़ा । उसने कहीं से कुछ आग लाकर वहाँ गिरा दी । आग पाकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ । वह कुछ पत्तियों और टहनियों को जलाकर तापने लगा ।

थोड़ी देर के बाद राजाने कहा—अब कुछ खाने को भी मिल जाय तो कितना अच्छा हो! कबूतर ने कबूतरी से कहा—मैं इस आग में गिरकर उस राजा का भोजन बनूँगा । कबूतरी को बड़ा दुःख हुआ । लेकिन उसने अपने प्रियतम को अपने धर्म का पालन करने से नहीं रोका । कबूतर तुरन्त आग में गिरा । राजा घबड़ा गया— एक पक्षी आग में गिरकर छटपटा रहा था । संन्यासी ने राजा से कहा-'महाराज, घबड़ाइये नहीं, लीजिये, आप केलिए भोजन भी आ गया । खुशी से भूख मिटाइये । राजा ने कबूतर का मांस भून कर खा लिया ।'

संन्यासी ने राजा से पूछा-क्या अब भूख मिट गयी?

राजा — और भी बढ़ गयी है।

कबूतरी ने यह बात सुनी। उस ने सोचा— मेरे स्वामी के बलिदान से भी राजा की भूख नहीं मिटी है। अब मुझे भी आत्म-समर्पण करके उन्हें सुखी बनाना चाहिये। अपने स्वामी के त्याग-पथ पर चलना मेरा कर्तव्य है।'

यह सोचकर वह भी आग में गिरी। राजा चकित हो गया।

सन्यासी—राजन, लीजिए, आप केलिए और भी आहार आ गया। खाइये और भूख की ज्वाला शान्त कीजिये।

राजा ने कबूतरी का मांस भी खाया। उस की भूख मिट गयी। वह उस पेड़ के नीचे आराम से सोया।

दूसरे दिन दोनों राजमहल लौट आये। छठा महीना पूरा होने में एक दिन और रह गया था। सन्यासी ने उस दिन शाम को राजा से कहा— 'महाराज, मैं कल यहाँ से जाना चाहता हूँ। अनुमति दे दीजिये।'

राजा — मेरे सवाल का जवाब दिये बिना आप कैसे जा सकेंगे ?

सन्यासी — महाराज, मैं ने जवाब तो दे दिया है।

राजा — कब ?

सन्यासी — उस दिन - उस स्वयंवर के दिन ।

राजा घबरा गया । उसे कुछ भी याद नहीं आया । सन्यासी कहने लगा - राजन, आप को याद नहीं होगा । सुनो, मैं बताता हूँ ।

उस दिन स्वयंवर में मैं चाहता तो मैं एक राजकुमारी पा सकता था, मुझे आधा राज्य भी मिल सकता था । लेकिन मैं ने वह सब छोड़ दिया । क्योंकि मेरे दिल में संसार के सुख - भोग की इच्छा नहीं है । इसीलिए मैं वहाँ से भाग निकला । यह है सन्यास । संसार का सारा सुख खुद आकर गले पड़े तब भी उसे त्याग देना ही सन्यास है ।

उसी प्रकार एक कबूतर और कबूतरी ने आप केलिए अपना आत्मसमर्पण किया था । आप को भूखा

देखकर पहले कबूतर ने आप केलिए अपनी बलि चढ़ाई। उस के बाद कबूतरी ने भी आप केलिए आत्मत्याग किया। मैं ने उन की बातचीत सुनी थी। देखो, गृहस्थाश्रम धर्म का पालन!

अब आप समझ गये होंगे कि सन्यासी और गृहस्थ दोनों अपने अपने स्थान पर समान हैं। दूसरों के सुख केलिए आत्मसमर्पण करने को तैयार रहनेवाला सच्चा गृहस्थ है। सन्यासी का भी यही धर्म है।

सन्यासी का जवाब सुनकर राजा का सन्देह दूर हो गया। उसने अपना जीवन दूसरों के सुख केलिए ही अर्पित किया। उस के राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी।

धन्य पद्मिनी

चित्तूर के राणा भीमसेन थे । पद्मिनी उन की रानी थी । वह अनुपम सुन्दरी थी । सब लोग उस के असीम सौन्दर्य की चर्चा करते थे ।

उस समय दिल्ली में अलावुद्दीन राज करते थे । उन्होंने पद्मिनी के सौन्दर्य की बात सुनी । किसी न किसी तरह उसे अपनी बेगम बनाने की उन की इच्छा हुई । उन्होंने राणा भीमसिंह को एक ख़त लिखा । उसका मतलब यह था—'मैं पद्मिनी को चाहता हूँ । तुम उसे मुझे सौंप दो । उस से मेरे अन्तःपुर की शोभा बढ़ेगी । यदि तुम उसे देने से इनकार करोगे तो उस का नतीजा अच्छा नहीं होगा' ।

पत्र पढ़कर राणा आपे से बाहर हो गये । उन्होंने सोचा— 'बादशाह को इतना घमंड ! इतनी बेशर्मी !! यदि मैं उन से इस अपमान का पूरा पूरा बदला न ले सकूँ तो मैं राजपूत नहीं' ।

उन्होंने तुरन्त पत्र का जवाब लिखा । उस का सारांश यही था—'आप से ऐसी उम्मीद नहीं थी। राजपूत अपनी जान देंगे, पर आन नहीं देंगे । आप के होश ठिकाने नहीं हैं । यहाँ आने का मैं आप को निमन्त्रण देता हूँ । आप के होश दुरुस्त करना हम जानते हैं' ।

भीमसेन का पत्र पढ़कर अलाउद्दीन आग-बबूला हो गये । उन्होंने एक बड़ी सेना लेकर चित्तौर पर आक्रमण किया । घोर युद्ध हुआ । दोनों तरफ़ की सेनाओं ने अपनी अपनी वीरता दिखलायी । हज़ारों सिपाही हमेशा के लिए युद्ध-क्षेत्र में सो गये । खून की नदियाँ बहीं । कुछ दिनों तक लड़ाई होती रही । किसी की जीत या हार न हुई ।

आख़िर अलाउद्दीन ने एक तरक़ीब सोची । उन्होंने राणा को लिख भेजा कि 'व्यर्थ के रक्तपात से क्या लाभ है? मैं पद्मिनी को एक बार देखना ही चाहता हूँ । इसलिये आप मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें' ।

राणा ने पत्र पढ़ा । उन्हें बड़ा क्रोध आया । उन के दिल में प्रतिकार की आग भड़क उठी ।

पद्मिनी ने अपने स्वामी को शान्त किया और कहा—"बादशाह केवल मुझे देखना ही चाहते हैं। यदि उस से लड़ाई खतम हो सके तो उन्हें ज़रूर अनुमति देनी चाहिये । लेकिन इस शर्त पर आप उन्हें अनुमति दे सकते हैं कि बादशाह को एक आइने में मेरी प्रतिच्छाया ही देखकर अपने को सन्तुष्ट करना होगा। अगर वे हमारी यह शर्त मंजूर करें तो ऐसा करने में क्या हर्ज है? व्यर्थ के रक्तपात से हमारी रक्षा होगी न?"

राजा ने पहिले पद्मिनी की बात नहीं मानी। लेकिन पद्मिनी बड़ी चतुर थी। उस ने राणा को समझा-बुझा कर राज़ी कर लिया।

राणा ने अलाउद्दीन को लिखा कि "एक शर्त पर हम आप की बात मंजूर करते हैं । शर्त यह है कि आप को अकेले आना होगा और पद्मिनी की प्रतिच्छाया आइने में देखकर लौट जाना होगा"।

अलाउद्दीन बड़े चालाक थे। सोचा–'किसी तरह

चित्तौर-दुर्ग में प्रवेश कर सकूँ तो फिर सब बातें मैं ठीक कर लूंगा'। उन्होंने अपने कुछ खास सिपाहियों को पहाडों पर छिपाकर रखा। राणा को सन्देश भेजा कि उन की शर्तें स्वीकार हैं।

अलाउद्दीन चित्तौर के अन्तःपुर में दाखिल हुए। महाराणा ने उन का स्वागत किया। बातचीत शुरू हुई। अचानक अलाउद्दीन को सामने रखे हुए आइने में पद्मिनी की प्रतिच्छाया देख पडी। उस की सुन्दरता पर वे मोहित हो गये। पीछे घूमकर देखने की उन की इच्छा हुई। पर अपने को अकेला समझकर वे चुप रहे। उन का मन बेचैन हो रहा था। बडी मुश्किल से उन्होंने मन को रोक रखा। पांच मिनट के बाद वह परछाई एक सुन्दर, मधुर स्वप्न के समान गायब हो गयी। अलाउद्दीन ने एक लंबी सांस ली।

बादशाह उठे। लौटने को तैयार हुए। महाराणा भी उन के साथ कुछ दूर तक गये। फाटक के बाहर आते ही अलाउद्दीन ने सीटी दी। पहाडों में छिपे हुए सैकडों सिपाही वहाँ पहुँच गये। उन्होंने भीमसिंह

को बाँध लिया। इस धोखे से महाराणा भीमसिंह दिल्ली में अलाउद्दीन के कैदी हो गये। शर्त यह रखी गयी कि पद्मिनी को पाये बिना राणा का छुटकारा नहीं हो सकेगा।

पद्मिनी ने भी बादशाह को धोखा देकर अपने स्वामी को बचाने का निश्चय किया। उसने बादशाह को सन्देश भेजा कि वह अपनी दासियों के साथ दिल्ली में आ रही है।

यह ख़बर पाकर बादशाह फूले न समाये। पद्मिनी के स्वागत का अच्छा प्रबन्ध किया गया।

शाम को ८० पालकियाँ वहाँ आ गयीं। सब में पद्मिनी की दासियाँ थीं। पद्मिनी ख़बर दी कि मैं अपने पति के अन्तिम दर्शन करना चाहती हूँ। बादशाह ने उसे इजाज़त दे दी।

एकाएक जेलखाने में शोरगुल हुआ। तलवारों की झनझनाहट हुई। बादशाह घबराये। उन्होंने पता लगाया कि क्यों यह शोरगुल हो रहा है। उन्हें ख़बर मिली कि भीमसेन क़ैद से छूट गये हैं।

पालकियों में दासियों के वेष में राजपूत वीर आये थे। वे अपने राणा को छुडाकर ले गये। अलावुद्दीन शरमिन्दा हो गये। लेकिन उन्होंने इस का बदला लेने का निश्चय किया और पूरी तैयारी के साथ फिर चित्तौर पर चढाई की। अब की बार भी भीमसेन ने बड़ी बहादूरी के साथ उनका मुकाबला किया। लेकिन आखिर राजपूत सेना तितर बितर हो गयी। भीमसेन की हिम्मत टूट गयी।

अन्तःपुर में 'जौहर व्रत' की तैयारी हुई। अपने सतीत्व की रक्षा केलिए राजपूत रमणियों ने धधकती हुई आग में बडी खुशी से अपने प्राणों की आहुति चढाई।

राजपूतों ने भी बडी वीरता के साथ युद्ध करते हुए वीर-गति पायी।

अलावुद्दीन विजय-गर्व से उन्मत्त होकर अन्तःपुर में दाखिल हूए। पद्मिनी की मूर्ति उन की आँखों में बसी हुई थी। अब वे उसके दर्शन केलिए उतावले हो रहे थे। उन्हें अन्तःपुर में एक जगह पर राख की ढ़ेरी नज़र आयी!! सब बातें उनकी समझ में आ

गयीं । उन्होंने एक ठण्डी आह भरी । हाय! जिस केलिए इतनी खून ख़राबी हुई, वह न मिल सकी!! धन्य पद्मिनी!!

गधे की हजामत

पहले बगदाद शहर में एक नाई रहता था। उसका नाम अली था । वह बडा घमण्डी और बदमाश था।

उन दिनों बगदाद में नाइयों की बडी कमी थी। उस शहर के अमीर, क़ाज़ी और बडे बडे अफ़सर अली के यहाँ आकर हजामत बनवाते थे । वह हजामत की कला में बडा होशियार था । आँखें मूँद करके भी बाल बनाना उसके बाएँ हाथ का खेल था । उसने अपने इस पेशे में खूब धन कमाया था । धन के बढ़ने के साथ साथ उसका घमंड भी बढ़ता गया । वह किसी की परवाह नहीं करता था । सब लोग उस से डरते थे । उसके विरुद्ध कुछ कहने की हिम्मत किसी

को नहीं होती थी । सारे शहर में उसकी धाक जमी हुई थी ।

एक दिन की बात है कि उसे लकडी की सख्त ज़रूरत पडी । वह अपने मकान के फाटक पर लकडहारे का इन्तज़ार करने लगा । थोडी देर में उसने देखा कि एक गरीब लकडहारा अपने गधे पर लकडियों का एक गट्ठर लादे जा रहा है । अली ने उसे बुलाया और पूछा — इस सारी लकडी का क्या दाम लोगे ?

लकडहारा — पांच रुपया, सरकार!

'अरे बेवकूफ, इस छोटे से गट्ठर का इतना बडा दाम ? तू तो बडा लालची मालूम पडता है' ।

'आजकल लकडी बडी महँगी है, हुजूर!'

'मुझे तुझ से बहस करने कोलिये फुरसत नहीं है । अच्छा ले, मुँह-माँगा दाम, तमाम लकडी उतार दे' ।

लकडहारे ने पांच रुपया लेकर लकडी का गट्ठर वहाँ उतार दिया और जाने लगा ।

अली ने उसे पुकार कर कहा — अबे, क्या तू मुझ से बदमाशी करता है ? गधे की जीन भी उतार दे, वह भी लकडी की है न ?

लकडहारा—सरकार यह बेचने केलिए नहीं है। सिर्फ उस गद्दर का दाम पांच रुपया है।

अली—कमबख्त, मैं ने तेरा मुँह माँगा दाम दिया। अब मुझे धोखा देना चाहता है? उतार दे वह जीन भी, नहीं तो.........

लकडहारा—हुजूर माफ कीजिए, जीन को तो मैं कभी नहीं बेच सकता।

लकडहारे का जवाब सुनकर नाई गुस्से में आ गया और गधे की पीठ पर से जीन छीन ली। लकडहारे ने मना किया। तब उसे भी पकडकर खूब पीटा।

बेचारा लकडहारा रोते-कराहते काज़ी के पास पहुँचा और नाई की शिकायत की। वह काजी नाई का दोस्त था। इसलिए उस ने शिकायत सुनने से इनकार कर दिया।

लकडहारा निराश होकर चला गया। वह उस शहर के बडे काज़ी साहब के पास पहुँचा। वह काज़ी साहब भी उस नाई का दोस्त था। इसलिए लकडहारे को वहाँ भी निराश होना पडा। उस ने एक ठण्डी आह भरी और कहा—अब 'दुनिया में गरीबों का कोई मददगार नहीं है'।

लकड़हारा अपना घर चला गया। रास्ते में उसे एक बूढा आदमी मिला। लकड़हारे को बडा उदास देखकर बूढे ने उस की उदासी का कारण पूछा। लकड़हारे ने उसे सारी बातें कह सुनायीं। बूढ़े को उस पर बडा तरस आया। उस ने लकड़हारे को समझा-बुझाकर कहा—रंज मत करो, तुम खलीफा के पास जाकर फरियाद करो, वे जरूर इन्साफ करेंगे।

लकड़हारा उसे धन्यवाद देकर खलीफा के पास पहुँचा। उस ने खलीफा से फरियाद की। सब बातें सुनने के बाद खलीफा ने लकड़हारे से कहा—'गधे की पीठ पर जितनी लकडी थी उस तमाम लकडी के लिये तुम ने पांच रुपया दाम तय किया था। इसलिए इन्साफ़ की नज़र से तमाम लकडी नाई को पांच रुपये में मिल जानी चाहिये'।

फैसला सुनकर लकड़हारे को बडा दुख हुआ। वह बडी आशा बान्धकर आया था। लेकिन यहाँ भी उसे नाउम्मीद होना पडा। उसने बडे रंज के साथ खलीफा से कहा—हुजूर अब दुनिया में गरीबों पर रहम करनेवाला कोई नहीं है!

खलीफा — क्यों नहीं है? ज़रूर है। तुम भरोसा रखो। अन्याय करनेवाले को अन्त में ज़रूर दण्ड मिलेगा।

खलीफा को अच्छी तरह मालूम हो गया था कि नाई ने बेचारे लकडहारे को धोखा दिया है। उस ने नाई को एक अच्छा सबक सिखाना चाहा और लकडहारे को पास बुलाकर उस के कान में कुछ कहा। लकडहारा खलीफा को सलाम कर अपने घर लौटा।

कुछ दिन गुज़र गये। एक रोज़ लकडहारा नाई की दूकान पर गया। नाई पुरानी बात को भूल गया था। लकडहारे को उस ने अच्छी तरह पहचाना भी नहीं।

लकडहारे ने नाई से कहा — मेरे और मेरे एक दोस्त की हजामत बनानी है! आप कितना पैसा लेंगे?

नाई - दोनों केलिए चार रुपये लूँगा।

लकडहारा — अच्छा तब पहले मेरा बाल बनाइये, उसके बाद दोस्त को बुला लाऊँगा।

नाई ने लकडहारे के बाल बनाये। लकडहारा अपने दोस्त को बुलाने बाहर गया। थोडी देर बाद वह

अपने गधे को लेकर नाई के पास आया और बोला—यही मेरा दोस्त है, इस के बाल बना दीजिये।

नाई गुस्से से जल-भुन गया। उस ने गर्ज कर कहा—'बदमाश, क्या तू मेरा मजाक कर रहा है? जानता है, तू किस के सामने खडा है? चला जा, यहाँ से, नहीं तो तेरी जीभ खींच लूँगा'। लकडहारा कुछ बोलना ही चाहता था कि नाई ने उस की गर्दन पकडकर बाहर धकेल दिया।

लकडहारे ने खलीफा के पास जाकर शिकायत की। खलीफा ने नाई को अपन दरबार में बुलवाया और पूछा—'क्या तुम ने चार रुपये में इस लकडहारे और उस के दोस्त का बाल बनाना मंजूर किया था?

नाई—जी हुजूर।

खलीफा—तब क्यों इस के दोस्त के बाल बनाने से इनकार कर दिया?

नाई—हुजूर क्या गधा भी कहीं किसी का दोस्त हो सकता है?

खलीफा—ज़रूर हो सकता है। अगर, गधे की जीन को कोई लकडी मानकर खरीद सकता है तो गधे को किसी का दोस्त मानने में तुम्हें एतराज क्यों? तुम्हें

ज़रूर उस गधे के बाल बनाने होंगे। कल शाम को पांच बजे यहाँ बाहर खुली सडक पर सब के सामने तुम्हें गधे की हजामत बनानी होगी।

यह फ़ैसला सुनकर मानों नाई पर बिजली गिरी। वह अपनी भूल पर पछताने लगा।

खलीफ़ा ने शहर भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कल शाम को खलीफा के मकान के सामनेवाली सडक पर शहर का मशहूर नाई अली गधे की हजामत बनाएगा।

ऐलान सुनकर दूसरे दिन शाम को पाँच बजे हजारों लोग वह तमाशा देखने वहाँ इकट्ठे हुए। नाई भी अपनी हजामत की पेटी के साथ नियत समय पर वहाँ आ गया। उस ने गधे के तमाम बदन पर साबुन लगाकर उस के बाल बनाना शुरू किया। लोग हँसते-हँसते लोट पोट हो रहे थे और मन ही मन कहने लगे कि खलीफ़ा ने इसे अच्छा सबक़ सिखा दिया।

गधे के बाल बना चुकने पर नाई अपना सा मुँह लेकर घर चला गया। उस ने फिर कभी जीवन में किसी को नहीं सताया।